विषय- संस्कृत, बी॰ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा) डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र महाराजा कॉलेज, आरा
किरातार्जुनीयम् - प्रथम सर्ग, दिनांक - 29/07/20

पद्यांशव्याख्या।

सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविनः
समानमानान् सुहृदश्च बन्धुभिः।
स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः
कृताधिपत्यामिव साधु बन्धुताम् ॥10॥

<u>अन्वयः</u>- गतस्मयः सः अनुजीविनः प्रीतियुजः सखीन् इव सुहृदः बन्धुभिः समानमानान् इव बन्धुतां च कृताधिपत्याम् इव साधु सन्ततं दर्शयते।

<u>भावार्थ</u>- (गतस्मयः सः) निरभिमानी वह दुर्योधन (अनुजीविनः प्रीतियुजः सखीन् इव) सेवकों से प्रेमयुक्त मित्रों की तरह व्यवहार करता है (दिखलाता है) (सुहृदः बन्धुभिः समानमानान् इव दर्शयते) मित्रों के प्रति बन्धुओं के समान आदर

से व्यवहार करता हो (बन्धुतां कृताधिपत्यामिव साधु सन्ततं दर्शयते) तथा बन्धु वर्ग को राज्य के स्वामी जैसे सदैव भलीभाँति प्रदर्शित करता है। (अर्थात् इस प्रकार व्यवहार करता है कि इससे वैसा समझते हैं)

भावार्थ- इस पद्य में सुयोधन का अपने सेवकों आदि के प्रति सम्मानपूर्ण व्यवहार का उल्लेख किया गया है। 'साधु' का यहाँ विशिष्ट अर्थ है कि वह हृदय से भलीभाँति व्यवहार करता है, केवल दिखावटी नहीं।

पदव्याख्या- प्रीतियुजः सखीन् इव - प्रिय मित्रों की तरह प्रीत्या युज्यन्ते इति प्रीतियुजः, तान्। प्रीतिः = प्री+क्तिन्। युजः = युज् + क्विप् कर्तरि प्रत्यय।। अनुजीविनः - सेवकों को (द्वितीय बहु०)। अनु + जीव् + णिनि प्रत्यय कर्तरि। अनुजीवन्ति इति अनुजीविनः तान्। समानमानान् - समान आदर से युक्त। समानः मानः येषां ते समानमानाः, तान् (बहु०)। सुहृदः = मित्रों को, शोभनं हृदयं येषां ते सुहृदः, तान् सुहृदः। सु और हृद् के साथ संयुक्त होने पर हृदय को हृद् हो जाता है। गतस्मयः = अहङ्कार-रहित हो, जिसका अहङ्कार चला गया है (सः का विशेषण) गतः स्मयः यस्य सः (बहु०)। स्मयः = स्मि + अच्। 'तस्मै स्मयादेश विवर्जिताय' रघुवंश 5.19। सन्ततं दर्शयते = सदैव दिखाता है। दृश् + णिच् + लट्। कृताधिपत्याम् इव- जिनका आधिपत्य हो इस प्रकार का, मानों वे अधिपति ही बना दिये गये हों, स्वामी हों, कृतम् अधिपत्यं

यस्याः सा कृताधिपत्या, ताम् (बहु० 'बन्धुताम्'
के लिए) अधिपतेः भावः 'आधिपत्यम्' (अधिपति + यक्,
भावे) 'पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्' सूत्र से।
अथवा 'ष्यञ्' प्रत्यय भी। साधु = अच्छी प्रकार,
प्रयत्नपूर्वक, मन से। बन्धुताम् = बन्धुओं का
समूह, बन्धुगण। बन्धूनां समूहो बन्धुता, ताम्।
बन्धु + तल् + टाप् (स्त्रीप्रत्यय)। 'ग्रामजनबन्धुसहायेभ्य-
स्तल्' समूहार्थ तल् प्रत्यय। इति।